**Crop of Ramtil Oilseed**

1586. SHRI AJIT P. K. JOGI :

SHRI RADHAKISHAN MALAVIYA :

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state :

(a) whether Ramtil is a major oilseeds crop for the tribal farmers of Madhya Pradesh;

(b) if so, what is the total crop area together with the total yield of Ramtil and the total tribal area out of the above areas ;

(c) whether support price of Ramtil is announced by Government if not, what are the reasons therefor;

(d) whether there is demand of Ramtil in foreign countries, if so, what arrangements Government have made for its export; and

(e) whether any research work is being conducted in respect of Ramtil in view of the export potential of this crop ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI S. KRISHNA KUMAR) : (a) Yes, Sir.

(b) The preliminary assessment indicate that in 1993-94 area coverage may be 5.7 lakh ha. with a production of about 2.0 lakh tonnes. Separate recording of Ramtil in tribal area is not made.

(c) Niger is a minor oilseed crop. Its contribution to the total oilseeds is negligible. Therefore, it has not been included under minimum price support scheme.

(d) The export of Niger-seed is canalised through National Agricultural Co-perative Marketing Federation (NAFED), Tribal Co-operative Marketing Development Federation of India Ltd. (TRIFED) and National Dairy Development Board (NDDB).

(e) Research on different aspects of Niger is being carried out through All India Co-ordinated Research Project of Indian Council of Agricultural Research (ICAR) located a Jawahar Lal Nehru Krishi Viswa Vidyalaya Jabalpur in Madhya Pradesh.

**तिलहन उत्पादन कार्यक्रम हेतु सरकारी सहायता**

1587. **श्री अजीत जोगी :**

**श्री राधाकिशन मालवीय :**

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कई राज्य सरकारें केन्द्रीय सहायता द्वारा प्रदत्त सहायता से तिलहन उत्पादन कार्यक्रम क्रियान्वियन कर रही हैं;

(ख) यदि हां, तो इन राज्यों को बीजों की अपेक्षित किस्मों की समयोचित उपलब्धता सुनिश्चित कराने हेतु केन्द्रीय सरकार द्वारा क्या प्रबंध किए गए हैं, और

(ग) क्या सरकार इस संबंध में कोई विधान बनाएगी और क्या विभिन्न राज्यों से बीज संकलित करक तथा सभी राज्यों को उनकी आवश्यकतानुसार उनका समयोचित वितरण कराने की जिम्मेदारी लेगी ?

**कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एस० कृष्ण कुमार)** : (क) जी, हां ।

(ख) बीजों का उत्पादन देश की विभिन्न एजेंसियों के जरिए किया जा रहा है । भारतीय कृषि अनुसंधान प्रणाली द्वारा प्रजनक बीज का उत्पादन किया जाता है । राष्ट्रीय बीज निगम, भारतीय राज्य फार्म निगम और राज्य कृषि विभाग आधारों तथा प्रमाणित बीज का उत्पादन करते हैं ताकि संबंधित राज्यों में किसानों को समय पर इन बीजों को सप्लाई की जा सके ।

(ग) ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं है ।

**Establishment of International Institute of Tropical Poultry Production at Bangalore**

1588. SHRI B. K. HARIPRASAD : Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state :

(a) whether the Central Government are considering to establish an International Institute of Tropical Poultry Production at

Hassargata near Bangalore after amalgamation of the Central Poultry Training Institute, the Central Poultry Breeding Farm and the Central Duck Breeding Farm, located there;

(b) whether any high level committee has been set up to work on the preliminaries and the recommendations, if any;

(c) the nature of research facilities to be provided by this Global Poultry Institute to scholars from both developing and developed countries in tropical poultry;

(d) whether any expertise will be obtained from International Egg Commission, London and other such international organisations to undertake meaningful research in tropical poultry products, if so, what are the details thereof; and

(e) by when this institute is likely to start functioning ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ARVIND NETAM) : (a) to (c) A Committee was constituted for the purpose of Establishment of International Institute for Tropical Poultry Production at Hessarghatta, Bangaloret The Institute when established will impart training in various disciplines of poultry production.

(d) No, Sir.

(e) Does not arise at present.

**शोध केन्द्रों तथा खेतों से प्राप्त की गई औसत कृषि उपज में अंतर**

1589. **डा० जितेन्द्र कुमार जैन :**

**श्री राम जेठमलानी :**

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में कृषि शोध-कर्ताओं द्वारा शोध केन्द्रों में प्राप्त की जाने वाली तथा किसानों द्वारा खेतों से प्राप्त की गई औसत कृषि उपज में क्रमश: भारी अंतर है;

(ख) यदि हां, तो इन दोनों के बीच कितना अंतर है।

(ग) क्या सरकार ने इस बात पर विचार किया है कि इस अन्तर को कम करने के लिए प्रयास किए जा सकते हैं ।

(घ) यदि हां, तो आठवीं पंचवर्षीय योजनावधि के अंत तक लक्ष्यानुसार यह अंतर कितना रह जाएगा ;

(ङ) सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक व्यापक योजना को कार्यान्वित करने के लिए क्या निर्णय लिया गया है; और

(च) उक्त योजना के कार्यान्वयन पर अनुमानत: कितनी धनराशि खर्च किए जाने की संभावना है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एस० कृष्ण कुमार) : (क) तथा (ख) कृषि उत्पाद फसलों, बीजों की गुणवत्ता, कृषि जलवायु स्थितियों तथा किसानों के पास उपलब्ध संसाधनों जैसी विभिन्न बातों पर निर्भर करता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रयोगशालाओं तथा खेतों में प्राप्त औसत कृषि उत्पादन के बीच की दूरी निर्धारित नहीं की जा सकती ।

(ग) जी, नहीं।

(घ) तथा (ङ) सरकार उत्पादकता में सुधार के लिए, वास्तविक कृषि दशाओं के तहत अपनाने हेतु किसानों के खेतों पर विभिन्न प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण कार्यक्रमों को कार्यान्वित करके कृषि विश्वविद्यालयों तथा राज्य/केन्द्रीय विस्तार अभिकरणों के जरिए ठोस प्रयत्न कर रही है।

(च) प्रयोगशालाओं एवं खेतों से प्राप्त कृषि उत्पाद के अंतर को पाटने के लिए अलग से आवंटन नहीं किये जाते हैं क्योंकि यह ग्रामीण एवं विकास प्रयासों द्वारा तैयार किया गया एक संघटक है।